"नाम" – ऐक संजीवनी बूटी.....!

1. संसार रोगी नाम दारू – मैल लागै सच बिना । गुर वाक निरमल सदा चानण – नित साच तीरथ मजना ।

अर्थः- जगत (विकारों में) रोगी हुआ पड़ा है, परमात्मा का नाम (इन रोगों का) इलाज है । सदा-स्थिर प्रभु के नाम के बिना (मन

को विकारों की) मैल लग जाती है । गुरु का पवित्र शब्द (मनुष्य को) सदा (आत्मिक) प्रकाश (देता है, यही) नित्य सदा कायम रहने वाला तीर्थ है, यही तीर्थ स्नान है ।

तीरथ नावण जाउ - तीरथ नाम है । तीरथ सबद बीचार - अंतर गिआन है ।

अर्थः- मैं (भी) तीर्थों पर स्नान करने जाता हूँ (पर मेरे वास्ते परमात्मा का) नाम (ही) तीर्थ है । गुरु के शब्द को विचार-मण्डल में अंतर में टिकाना ही (मेरे लिए) तीर्थ है (क्योंकि इसकी इनायत से) मेरे अंदर परमात्मा के साथ गहरी सांझ बनती है ।

गुर गिआन साचा थान तीरथ - दस पुरब सदा दसाहरा । हउ नाम हरि का सदा जाचउ - देहु प्रभ धरणीधरा ।

अर्थः- सतिगुरु का दिया हुआ ये ज्ञान मेरे वास्ते सदा कायम रहने वाला तीर्थ-स्थान है, मेरे लिए दसों पवित्र दिन हैं दस पवित्र दिन (मसिआ, संगरांद, पूरनमासी, प्रकाश ऐतवार, सूर्य ग्रहण, चंद्र ग्रहण, दो अष्टमियां, दो चौदवीं), मेरे लिए गंगा का जन्म-दिन (दसाहरा = दस पाप हरने वाला दिन, जेठ सुदी दसमी, गंगा का जनम दिन) है । मैं तो सदा प्रभु का नाम ही माँगता हूँ और (अरदास करता हूँ) हे धरती के आसरे प्रभु ! मुझे अपना नाम दे ।

साच न लागै मैल - किआ मल धोईऐ । गुणह हार परोइ - किस कउ रोईऐ ।

अर्थः- सदा-स्थिर प्रभु के नाम में जुड़ने से मन को (विकारों की) मैल नहीं लगती, (फिर तीर्थ आदि पर जा के) कोई मैल धोने की

आवश्यक्ता नहीं रहती । परमात्मा के गुणों का हार (हृदय में) परो के किसी के आगे पुकार करने की भी जरूरत नहीं रहती ।

वीचार मारै तरै तारै - उलट जोन न आवए । आप पारस परम धिआनी - साच साचे भावए ।

अर्थः- जो मनुष्य गुरु के शब्द के विचार द्वारा (अपने मन को विकारों की ओर से) मार लेता है, वह संसार-समुंदर से पार लांघ जाता है, (और लोगों को भी) पार लंघा लेता है, वह दोबारा (के चक्कर) में नहीं आता । वह मनुष्य आप पारस बन जाता है, बड़ी ही ऊँची सूझ का मालिक हो जाता है, वह सदा-स्थिर प्रभु का रूप बन जाता है, वह सदा-स्थिर प्रभु को प्यारा लगने लग पड़ता है ।

आनंद अनदिन हरख साचा - दूख किलविख परहरे । सच नाम पाइआ गुर दिखाइआ - मैल नाही सच मने । (687)

अर्थः- उस मनुष्य के अंदर हर वक्त आनंद बना रहता है, सदा-स्थिर रहने वाली खुशी पैदा हो जाती है, वह मनुष्य अपने (सारे) दुख-पाप दूर कर लेता है । जिस मनुष्य ने सदा-स्थिर प्रभु का नाम प्राप्त कर लिया, जिसको गुरु ने (प्रभु) दिखा दिया, उसके सदा-स्थिर नाम जपते मन को कभी विकारों की मैल नहीं लगती ।

a. अंतर मैल जे तीरथ नावै - तिस बैकुंठ न जानां । लोक पतीणे कछू न होवै - नाही राम अयाना ।

अर्थः- अगर मन में विकारों की मैल (भी टिकी रहे, और) कोई मनुष्य तीर्थों पर नहाता फिरे, तो इस तरह उसने स्वर्ग में नहीं जा

पहुँचना; तीर्थों पर नहाने से लोग तो कहने लग पड़ेंगे कि ये भक्त है, पर लोगों के पतीजने से कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि परमात्मा (जो हरेक के दिल की जानता है) अंजान नहीं है ।

पूजहु राम - एक ही देवा । साचा नावण - गुर की सेवा ।

अर्थ:- गुरु के बताए मार्ग पर चलना ही असल (तीर्थ) स्नान है । सो, एक परमात्मा देव का भजन करो ।

जल कै मजन जे गत होवै - नित-नित मेंडुक नावह । जैसे मेंडुक तैसे ओइ नर - फिर-फिर जोनी आवह ।

अर्थ:- पानी में डुबकियां लगाने से अगर मुक्ति मिल सकती होती तो मेंडक सदा ही नहाते हैं । जैसे वह मेंढक हैं वैसे वे मनुष्य समझो; (पर, नाम के बिना वो) सदा जूनियों में पड़े रहते हैं ।

मनह कठोर मरै बानारस - नरक न बाचिआ जाई । हरि का संत मरै हाड़म्बै - त सगली सैन तराई ।

अर्थ:- अगर मनुष्य काशी में शरीर त्यागे, पर मन में कठोर हो, तो इस तरह उसका नर्क (में जाना) छूट नहीं सकता । (दूसरी तरफ) परमात्मा का भक्त मगहर की श्रापित धरती में भी अगर जा मरे, तो वह बल्कि और सारे लोगों को भी पार लंघा लेता है ।

दिनस न रैन बेद नही सासत्र - तहा बसै निरंकारा । कह कबीर नर तिसह धिआवहु - बावरिआ संसारा । (४८४)

अर्थः- कबीर कहता है:- हे मनुष्यो ! हे कमले लोगो ! उस परमात्मा को ही स्मरण करो । वह वहाँ बसता है जहाँ दिन और रात नहीं, जहाँ वेद नहीं, जहाँ शास्त्र नहीं (भाव, वह प्रभु उस आत्मिक अवस्था में पहुँच के मिलता है, जो आत्मिक अवस्था किसी खास समय की मुहताज नहीं, किसी खास धर्म-पुस्तक की मुहताज नहीं) ।

2. जो जो दीसै सो सो रोगी । रोग रहित मेरा सतिगुर जोगी ।

अर्थः- हे भाई ! जो जो जीव (जगत में) दिखाई दे रहा है, हरेक किसी ना किसी रोग में फंसा हुआ है । (असल) जोगी मेरा सतिगुरु (सब) रोगों से रहित है ।

हउमै रोग मानुख कउ दीना । काम रोग मैगल बस लीना ।
द्रिसट रोग पच मुए पतंगा । नाद रोग खप गए कुरंगा ।

अर्थः- हे भाई ! (परमात्मा ने) मनुष्य को अहंकार का रोग दे रखा है, काम-वासना के रोग ने हाथी को अपने वश में किया हुआ है । दीए की ज्योति को देखने के रोग के कारण पतंगे दीए की ज्योति पर जल मरते हैं । घंडे हेड़े की आवाज़ सुनने के रोग के कारण हिरन दुखी होते हैं।

जिहवा रोग मीन ग्रसिआनो । बासन रोग भवर बिनसानो ।
हेत रोग का सगल संसारा । त्रिबिध रोग मह बधे बिकारा ।

अर्थः- हे भाई ! जीभ के रोग के कारण मछली पकड़ी जाती है, सुगधि के रोग के कारण (फूल की सुगधि लेने के रस के कारण) भँवरा (फूल की पंखुड़ियों में बंद हो के) नाश हो जाता है । हे भाई ! सारा जगत

मोह के रोग का शिकार हुआ पड़ा है, त्रैगुणी माया के मोह के रोग में बँधे हुए जीव अनेक विकार करते हैं ।

रोगे मरता रोगे जनमै । रोगे फिर-फिर जोनी भरमै । रोग बंध रहन रती न पावै । बिन सतिगुर रोग कतह न जावै ।

अर्थ:- हे भाई ! (मनुष्य किसी ना किसी आत्मिक) रोग में (फसा हुआ) ही मर जाता है, (किसी ना किसी आत्मिक) रोग में (ग्रसा हुआ) ही पैदा होता है, उस रोग के कारण ही बार-बार जूनियों में भटकता रहता है, रोग के बंधनो के कारण (जूनियों में) भटकने से रत्ती भर भी खलासी नहीं मिल सकती । हे भाई ! गुरु की शरण के बिना (यह) रोग किसी तरह भी दूर नहीं होता ।

पारब्रहम जिस कीनी दइआ । बाह पकड़ रोगह कढ लइआ । तूटे बंधन साधसंग पाइआ । कह नानक गुर रोग मिटाइआ । (1140-1141)

अर्थ:- हे भाई ! जिस मनुष्य पर परमात्मा ने मेहर कर दी, उसको उसने बाँह पकड़ के रोगों से बचा लिया । जब उसने गुरु की संगति प्राप्त की, उसके (आत्मिक रोगों के सारे) बंधन टूट गए । हे नानक ! कहः (जो भी मनुष्य गुरु की शरण पड़ा,) गुरु ने (उसका) रोग मिटा दिया ।

3. नाम के धारे सगले जंत । नाम के धारे खंड ब्रहमंड ।

अर्थ:- सारे जीव-जंतु अकाल-पुरख के आसरे हैं, जगत के सारे (हिस्से) भी प्रभु के टिकाए हुए हैं ।

नाम के धारे सिम्रित बेद पुरान । नाम के धारे सुनन गिआन धिआन ।

अर्थः- वेद, पुराण, स्मृतियां प्रभु के आधार पर हैं, ज्ञान की बातें सुननी और तवज्जो जोड़नी भी अकाल-पुरख के आसरे ही हैं ।

नाम के धारे आगास पाताल । नाम के धारे सगल आकार ।

अर्थः- सारे आकाश-पाताल प्रभु-आसरे हैं, सारे शरीर ही प्रभु के आधार पर हैं ।

नाम के धारे पुरीआ सभ भवन । नाम कै संग उधरे सुन स्रवन।

अर्थः- तीनों भवन और चौदह लोक अकाल-पुरख के टिकाए हुए हैं, जीव प्रभु में जुड़ के और उसका नाम कानों से सुन के विकारों से बचते हैं ।

कर किरपा जिस आपनै नाम लाए । नानक चउथे पद मह सो जन गत पाए । (284)

अर्थः- जिस को मेहर करके अपने नाम में जोड़ता है, हे नानक ! वह मनुष्य (माया के असर से ऊपर) चौथे तल पर पहुँच कर उच्च अवस्था प्राप्त करता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"